



# ऑग्रोमेट अँडवायझरी बुलेटीन

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, ऐएमएफयु,

कृषी हवामानशास्त्र विभाग

फोन : ०२०-२९५१६२६४

कृषी महाविद्यालय, पुणे ४११ ००५ ई-मेल : [amfupune@gmail.com](mailto:amfupune@gmail.com)



हवामान अंदाजावर आधारित कृषी सल्ला समितीची साप्ताहिक बैठक दि. १३/०२/२०२६

जिल्हा : सोलापूर

हवामान अंदाज :

| हवामान घटक                   | पुढील पाच दिवसांचा हवामानाचा अंदाज<br>(१३/०२/२०२६ ते १७/०२/२०२६) |     |     |     |     |
|------------------------------|------------------------------------------------------------------|-----|-----|-----|-----|
| दिनांक                       | 14                                                               | 15  | 16  | 17  | 18  |
| पाऊस (मिमी)                  | 0                                                                | 0   | 0   | 0   | 0   |
| कमाल तापमान (अं. से.)        | 35                                                               | 36  | 36  | 36  | 35  |
| किमान तापमान (अं. से.)       | 20                                                               | 21  | 21  | 21  | 21  |
| ढग स्थिती (आकाश)             | 2                                                                | 1   | 2   | 2   | 2   |
| सकाळची सापेक्ष आर्द्रता (%)  | 61                                                               | 59  | 56  | 55  | 61  |
| दुपारची सापेक्ष आर्द्रता (%) | 38                                                               | 37  | 37  | 38  | 37  |
| वाऱ्याचा वेग (किमी/तास)      | 12                                                               | 13  | 11  | 8   | 14  |
| वाऱ्याची दिशा (अंश)          | 135                                                              | 128 | 118 | 108 | 152 |

## हवामान अंदाजावर आधारित कृषी सल्ला

| पीक                              | पीक अवस्था           | कृषि विषयक सल्ला                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |
|----------------------------------|----------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| हवामान सारांश/ इशारा             |                      | भारतीय हवामान खात्याच्या प्रादेशिक हवामान केंद्र, मुंबई यांच्या अंदाजानुसार जिल्ह्यात दिनांक १३ ते १७ फेब्रुवारी, २०२६ दरम्यान हवामान कोरडे आणि थंड राहण्याची शक्यता आहे.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |
| विस्तारित श्रेणी अंदाज (ईआरएफएस) |                      | विस्तारित श्रेणी अंदाजानुसार (ईआरएफएस) मध्य महाराष्ट्र विभागात (धुळे, नंदुरबार, जळगाव, नाशिक, अहमदनगर, पुणे, सातारा, सांगली, सोलापूर, कोल्हापूर) दिनांक १५ ते २१ फेब्रुवारी, २०२६ दरम्यान <ul style="list-style-type: none"> <li>➤ पावसाची शक्यता नाही.</li> <li>➤ कमाल तापमान सरासरी इतके राहण्याची शक्यता आहे.</li> <li>➤ किमान तापमान सरासरी इतके राहण्याची शक्यता आहे.</li> </ul>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             |
| सामान्य सल्ला                    |                      | <ul style="list-style-type: none"> <li>पिकाचे कीड व रोगासंदर्भात नियमित सर्वेक्षण करून , जर प्रादुर्भाव आर्थिक नुकसान पातळीच्या वर असल्यास, विविध योग्य त्या उपाययोजना कराव्यात.</li> <li>कीटकनाशक आणि तणनाशकाची फवारणी करताना वेगवेगळी करावी.</li> <li>कोणत्याही पिकावर कोणतेही कीटकनाशक, बुरशीनाशक किंवा तणनाशक फवारताना , त्या पिकाकरिता त्या रासायनिक औषधाचा लेबल क्लेम असल्याची खात्री करूनच वापर करावा.</li> <li>भाजीपाला पीके जसे वांगी, भेंडी, गवार इ. लागवडीनंतर रसशोषक किडींच्या जैविक नियंत्रणासाठी पीकाच्या अवस्थेनुसार पिवळे चिकट सापळे, सापळा पीके, जैविक बुरशीनाशके (मेटारायझियम, ट्रायकोग्रामा, व्हर्टीसिलीयम इ.) यांचा वापर करावा आवश्यकता असल्यास रासायनिक कीड आणि बुरशीनाशकाचा वापर करावा.</li> <li>हवामान अंदाजावर आधारित कृषी सल्ला व हवामानाचा पूर्वानुमाना करिता मेघदुत मोबाईल ॲपचा वापर करावा.</li> <li>मेघगर्जना व विजेच्या पूर्वानुमानाकरिता दामिनी मोबाईल ॲपचा वापर करावा.</li> <li>कृषिविषयक माहितीसाठी, महात्मा फुले कृषि विद्यापीठाच्या कृषिदर्शनीचा एक संदर्भ ग्रंथ म्हणून उपयोग करावा.</li> </ul> |
| ऊस                               | लागवड                | सुरु उसाची लागवड १५ फेब्रुवारी पर्यंत करावी. १५ फेब्रुवारी पर्यंत तुटलेल्या उसाचा खोडवा ठेवणे फायदेशीर ठरते. सुरु ऊसाला एका आड एक सरीतून पाणी द्यावे व पीक तणविरहीत ठेवावे. बाष्पीभवन कमी करण्यासाठी उसाचे पाचट सरीमध्ये आच्छादन म्हणून वापरावे. ज्या ठिकाणी पट्टा पद्धतीने लागण केलेली आहे अशा ठिकाणी ठिबक सिंचन पद्धतीचा अवलंब करावा.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           |
| गहू                              | दाणे भरण्याची अवस्था | गरजेनुसार व जमिनीच्या मगदुराप्रमाणे गहू पिकास पाणी द्यावे. मावा किडीच्या नियंत्रणासाठी मेटारायझियम ॲनिसोप्ली ५० ग्रॅम किंवा बिन्हेरिया बॅसियाना ५० ग्रॅम किंवा व्हर्टीसिलीयम लेकॅनी ५० ग्रॅम प्रति १० लिटर पाणी या प्रमाणात फवारणी करावी. मावा किडीचे रासायनिक पद्धतीने नियंत्रण करण्यासाठी थायामेथो झाम २५                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       |

|                |                                 |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |
|----------------|---------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|                |                                 | टक्के विद्राव्य दाणेदार १ ग्रॅम प्रति १० लिटर पाणी या प्रमाणात मिसळून गरजेप्रमाणे १५ दिवसांचे अंतराने एक किंवा दोन फवारण्या कराव्यात.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |
| उन्हाळी भुईमूग | पेरणी अवस्था                    | उन्हाळी भुईमूगाची पेरणी १५ फेब्रुवारी पर्यंत तसेच पेरणीचे वेळी रात्रीचे किमान तापमान १८ अंश सेल्सिअस किंवा त्यापेक्षा जास्त असताना करावी. पेरणीसाठी भुईमूगाचे वाण फुले चैतन्य (केडीजी-१६०) १०० किलो प्रति हेक्टरी, फुले उन्नती व फुले भारती १२० ते १२५ किलो बियाणे प्रति हेक्टरी बियाणे वापरावे. बियाण्यापासून प्रादुर्भाव होणाऱ्या व रोपावस्थेत येणाऱ्या रोगापासून पिकाचे संरक्षण करण्यासाठी पेरणीपूर्वी प्रति किलो बियाण्यास २.५ ग्रॅम मॅन्कोझेब किंवा ४ ग्रॅम ट्रायकोडर्मा जैविक बुरशीनाशक चोळावे. नंतर एक किलो बियाण्यास २५ ग्रॅम रायझोबीयम आणि २५ ग्रॅम स्फुरद विरघळणारे जीवाणू संवर्धक (घनरूप किंवा द्रवरूप) चोळावे बीजप्रक्रिया केलेले बियाणे सावलीत सुकवून पेरावे. पेरणीसाठी दोन ओळीतील अंतर ३० सें.मी. व दोन रोपातील अंतर १० सें.मी. ठेवावे. उन्हाळी हंगामात जमीन ओलवून नंतर वापशावर पाभरीने अथवा टोकण पद्धतीने पेरणी करावी. टोकण पद्धतीने पेरणी केल्यास बियाणे कमी लागून उगवण चांगली होते. पेरणीच्या वेळेस १० किलो नत्र + २० किलो प्रति एकर स्फुरद द्यावे. खत व्यवस्थापन (सुधारीत शिफारशीनुसार २०१३) भुईमूगाच्या अधिक उत्पादनासाठी रासायनिक खत मात्रे सोबत जिप्सम १६० कि.प्रती एकर (८० प्रति एकर पेरणीवेळी तर उर्वरीत ८० प्रति एकर आऱ्या सुटतांना) जमिनीत मिसळून द्यावे. |
| रब्बी ज्वारी   | दाणे भरण्याची अवस्था            | ज्वारी पिकांमध्ये अमेरिकन लष्करी अळीचा प्रादुर्भाव दिसून आल्यास नियंत्रणासाठी निंबोळी अर्क ५% ची फवारणी करावी. कोरडवाहू रब्बी ज्वारीस संरक्षित पाणी उपलब्ध असल्यास पीक पोटरीत असतांना पेरणीनंतर ५० ते ५५ दिवसांनी द्यावे. बागायती ज्वारीमध्ये मध्यम जमिनीत तिसरे पाणी फुलोऱ्यात असतांना पेरणीनंतर ७० ते ७५ दिवसांनी आणि कणसात दाणे भरतांना पेरणीनंतर ९० ते ९५ दिवसांनी द्यावे. भारी जमिनीत ज्वारीला चौथ्या पाण्याची गरज भासत नाही.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |
| तूर            | काढणी अवस्था                    | तुरीच्या शेंगा वाळवल्यावर यांत्रिक पद्धतीने काढणी करावी अथवा पीक कापून घ्यावे व खळ्यावर मळणी करावी. तूर पिकाचा खोडवा घेवू नये कारण वांझ या रोगाचा प्रादुर्भाव वाढण्याची शक्यता असते. साठवणीपूर्वी तूर धान्य ५-६ दिवस चांगले उन्हात वाळवून पोत्यात किंवा कोठीत साठवावे. साठवण कोंदट व ओलसर जागेत करू नये. शक्य असल्यास कडूनिंबाचा पाला (५ टक्के) धान्यात मिसळून धान्य साठवावे. यामुळे धान्य साठवणीतील किडीपासून सुरक्षित राहते.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
| करडई           | फुलोरा ते बोंडे भरण्याची अवस्था | आवश्यकतेनुसार व उपलब्धतेनुसार पिकास पाणी पीक फुलोऱ्यात येताना ५५ ते ६० दिवसांनी द्यावे. पिकास पाण्याचा जास्त ताण पडू देऊ नये. जास्त पाण्यामुळे पीक मोठ्या प्रमाणात मर रोगास बळी पडते म्हणून करडई पिकास उपलब्धतेनुसार हलके पाणी द्यावे. करडईची फुले उमलण्यास सुरुवात होताच सायकोसिल या वाढ प्रतिरोधकाची १००० पी.पी.एम. त्रितेच्या (१००० मिली. ५०० लिटर पाण्यात) या द्रावणाची फवारणी केल्यास उत्पादनात १५ ते २० टक्के वाढ झाल्याचे प्रयोगांती दिसून आलेले आहे.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       |
| हरभरा          | घाटे भरण्याची अवस्था            | हरभरा पीक पाण्यास अतिशय संवेदनशील असल्याने गरजेपेक्षा जास्त पाणी दिल्यास पीक उभळते. पिकास दिलेली खते व्यवस्थित उपलब्ध होण्यासाठी व उत्पादनामध्ये मोठी वाढ होण्यासाठी तुषार सिंचन पद्धतीचा वापर करावा. सध्याच्या ढगाळ हवामानामुळे हरभरा पिकावरील घाटेअळीच्या नियंत्रणासाठी पक्षी थांबे उभारावेत व हेक्टरी ५ या प्रमाणे कामगंध सापळे लावावेत. मावा किडीच्या नियंत्रणासाठी मेटारायझियम अॅनिसोप्ली ५० ग्रॅम किंवा बिव्हेरिया बॅसियाना ५० ग्रॅम किंवा व्हरटीसिलियम लेकॅनी ५० ग्रॅम प्रति १० लिटर पाणी या प्रमाणात फवारणी करावी. पीक फुलोऱ्यात असताना आणि घाटे भरण्याच्या अवस्थेमध्ये पाण्याचा ताण पडल्यास २ टक्के युरीयाची पहिली फवारणी करावी आणि त्यानंतर १०-१५ दिवसांनी दुसरी फवारणी २ टक्के पोटॅशियम नायट्रेटची करावी (२०० ग्रॅम / १० लिटर).                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |
| कांदा (रांगडा) | पीक वाढीची अवस्था               | फुलकिडीच्या नियंत्रणासाठी लॅम्बडा सायहॅलोथ्रीन ५% ई.सी. १० मि.ली. किंवा टोलफेनपायरॅड १५ ई.सी. २ मि.ली. किंवा डेल्टामेथ्रीन ११ ई.सी. ३ मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यातून आलटून पालटून फवारण्या कराव्यात. अधून मधून ५% निंबोळी अर्काची फवारणी करावी. करपा / मानमोड्या/ मानेचा पीळ रोगाच्या नियंत्रणासाठी डायफेनकोनॅझोल २५% ई.सी. १० मि.ली. १० लिटर पाण्यात किंवा टेब्युकोनॅझोल २५.९ टक्के ई.सी. १० मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यात किंवा अॅझोक्सिस्ट्रोबीन १८.२% + डायफेनकोनॅझोल ११.४१% १० मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यात किंवा अॅझोक्सिस्ट्रोबीन ११% + टेब्युकोनॅझोल १८.३% १० मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यात किंवा किटाझिन ४८% ई.सी. १० मि.ली. प्रति १० लिटर पाण्यातून १० दिवसांच्या अंतराने आलटून-पालटून फवारावेत.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           |
| केळी           | पीक वाढीची अवस्था               | करपा (सिगाटोका) रोगाच्या नियंत्रणासाठी रोगग्रस्त पानाचा भाग / पाने काढून बागेबाहेर जाळावीत तसेच केळीची पिल्ले धारदार कोयत्याने नियमित काढावीत. तसेच मेटेरीम ५५ टक्के + पायऱ्याक्लोस्ट्रोबिन ५ टक्के (६० टक्के डब्लु जी) ३० ग्रॅम १० लीटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी. त्यानंतर १५ ते २० दिवसांच्या अंतराने २ फवारण्या कराव्यात.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| द्राक्ष        | पीक वाढीची अवस्था               | केवडा रोगा च्या नियंत्रणासाठी मेटॅलॅक्झील एम ४ टक्के + मॅन्कोझेब ६४ टक्के डब्लु. पी. (०.२%) किंवा सायमोक्झॅनील ८ टक्के + मॅन्कोझेब ६४ टक्के डब्लु.पी (०.२%) किंवा फिर्नॅमिडॉन १० टक्के + मॅन्कोझेब ५० टक्के                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        |

|                                                                                                                                                             |                   |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|                                                                                                                                                             |                   | डब्ल्यू.जी. (०.२५%) या बुरशीनाशकांच्या फवारण्या १२ दिवसांचे अंतराने आलटून-पालटून कराव्यात. भुरी रोगाच्या नियंत्रणासाठी मायक्लोव्युटॅनील १०% डब्ल्यू पी ४ ग्रॅ./१० लि.पाणी किंवा डायफेनकोनेझोल २५ ई.सी. ५ मिली./१० लिटर पाणी किंवा पेनकोनेझॉल १०% इ.सी. ५ मिली./१० पाणी किंवा सल्फर ८० डब्ल्यू पी २५ ग्रॅ./१० लिटर पाणी किंवा सल्फर ८० डब्ल्यू डि.जी. १५ ते २० ग्रॅम / १० लिटर पाणी किंवा डायमिनोमार्क ५०% डब्ल्यू पी. १ ग्रॅम प्रति लिटर किंवा फोसेटाइल ए.एल. २ ग्रॅम प्रति लिटर किंवा पोटॅशियम बायकार्बोनेट ५ ग्रॅ./१० लिटर किंवा हेक्झाकोनेझॉल १ ग्रॅम प्रति लिटर पाण्यात मिसळून फवारणी करावी. फवारणी करताना मण्यांवर डाग येणार नाही व काढणी पश्चात औषधांचे अंश रहाणार नाहीत अशा औषधांची निवड करावी. निर्यातक्षम द्राक्षासाठी अॅम्पेलोमायसिस क्रिसक्विलीस बुरशीचा ५ ग्रम किंवा ५ मिली प्रति लिटर पाण्यात मिसळून फवारावे.                     |
| आंबा                                                                                                                                                        | पीक वाढीची अवस्था | आंबा मोहोर आल्यानंतर प्रतिबंधात्मक उपाय म्हणून कीटकनाशक आणि बुरशीनाशकाची फवारणी करावी. सध्याच्या ढगाळ हवामानामुळे आंब्यावरील तुडतुडे या किडीच्या नियंत्रणासाठी बुप्रोफेझिन २५% एस.सी. २० मिली किंवा इमिडॅक्लोप्रिड १७.८ एस.एल. ३ मिली किंवा लॅम्डा सायहॅलोथ्रिन ५% इ.सी. १० मिली प्रति १० लीटर पाण्यात मिसळून फवारावे. मोहरावरील करपा रोगाच्या नियंत्रणासाठी पहिली फवारणी डोळे फुटताच अॅझॉक्झीस्ट्रॉबीन २३% एस.सी. १० मिली/१० लि. पाण्यात मिसळून करावी. आंबा मोहरावरील भुरी रोगाच्या व्यवस्थापनासाठी पीक फुलल्यात असताना कार्बेन्डॅझीम १२% + मॅन्कोझेब ६३% डब्ल्यू.पी. (२० ग्रॅम/१० ली पाणी) या संयुक्त बुरशीनाशकाच्या दहा दिवसांच्या अंतराने दोन फवारण्या घ्याव्यात किंवा कार्बेन्डॅझीम ५० डब्ल्यू.पी. १ ग्रम प्रति लिटर पाणी किंवा हेक्झाकोन्याझोल १ मिली प्रति लिटर पाणी किंवा ८० डी.डब्ल्यू.जी. सल्फर २ ग्रम प्रति लिटर पाण्यातून फवारावे. |
| जनावरांचे व्यवस्थापन                                                                                                                                        |                   | जनावरांची ऊर्जेची गरज भागवण्यासाठी हिवाळ्यात दैनंदिन रेशनमध्ये १०% - २०% मिठासह प्राण्यांना नियमितपणे खनिज मिश्रण आणि गव्हाचे धान्य , गूळ इत्यादी द्या. सकाळच्या वेळी गुरे/शेळ्या चरण्यास नेऊ नका. रात्रीच्या वेळी गुरे/शेळी उघड्यावर ठेवू नका. पोल्ट्री शेडमध्ये कृत्रिम प्रकाश देऊन पिलांना उबदार ठेवा.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |
| *टिप : शेतकरीबंधूनी पिकावर कीटकनाशकाची, बुरशीनाशकाची फवारणी करताना स्वतःची योग्य ती खबरदारी/ काळजी घ्यावी तसेच फवारणी करिता किसान कवच बॉडीसूटचा वापर करावा. |                   |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |

#### स्त्रोत :

- १) हवामान पूर्वानुमान : प्रादेशिक हवामान पूर्वानुमान केंद्र, मुंबई.
  - २) मागील हवामान :-
- ठिकाण : कृ.म.वि., पुणे.  
दि. : १३.०२.२०२६

स्वाक्षरीत

प्रमुख अन्वेषक, ग्राकृमौसे, ऐएमएफयु, पुणे तथा  
प्रमुख, कृषि हवामानशास्त्र विभाग, कृ.म.वि., पुणे